akrosh akrosh

आक्रोश

Mensuel

October - November 2021 - Volume 23 No 7 - Rs 10.00 - अक्टूबर -नवंबर २०२१ खंड २३ अंक ७

http://ghtu.mu

विकसित देशों को जलवायु संकट से निपटने के लिए और ज़िम्मेदार होना चाहिए।

ग्लासगो में हुए अंतरराष्ट्रीय जलवायु सम्मेलन 'COP 26' में विकासशील देशों ने स्पष्ट शब्दों में विकसित देशों से कहा कि धरती को बचाने की अपनी ज़िम्मेदारी को और प्रतिबद्धता से निभाना चाहिए। याद रहे कि 2009 में एक समझौता हुआ था, जिसके तहत धनी देशों को प्रति वर्ष सौ अरब डॉलर विकासशील देशों को देना चाहिए था, लेकिन विकसित देश ने समझौते का सम्मान नहीं किया है। यही मुख्य कारण है कि कार्बन–उत्सर्जन विश्व में कम नहीं हुआ।

अब ग्लासगो में हुए सम्मेलन में विकसित देशों का लक्ष्य यह है कि 2050 तक शून्य कार्बन– उत्सर्जन हो। पर समस्या यह है कि इस लक्ष्य की प्राप्ति कैसे होगी ? यहाँ रेखांकित करना उपयुक्त है कि इस सम्मेलन से ठीक पहले इटली में G 20 के नेताओं की बैठक में सदस्य देशों के नेता इस बात पर सहमत हो गए थे, कि वैश्विक तापमान डेढ़ डिग्री से ज़्यादा नहीं बढ़ने देना चाहिए; लेकिन 2050 तक कार्बन–उत्सर्जन शून्य करने के लिए कोई सहमति नहीं हुई थी।

शून्य कार्बन को लेकर विश्व–नेताओं के बीच बंटवारा स्पष्ट है। फ्रांस के राष्ट्रपति एमैनएल मैक्रों स्पष्ट शब्दों में विश्व को बता चुका है कि कार्बन–उत्सर्जन शून्य को लेकर जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए। लगता है कि G 20 के लिए कार्बन–उत्सर्जन शून्य व्यावहारिक रूप से मुश्किलें पैदा करेगा। गैस उत्सर्जन को नियंत्रित करना विकसित देशों के आर्थिक हित में नहीं है।

मॉरीशस के प्रधान मंत्री ने 'COP 26' सम्मेलन के दौरान मॉरीशस के गैस उत्सर्जन को 40% से कम करने का प्रण लिया है। अस्सी प्रतिशत कार्बन–उत्सर्जन G 20 के बीस देशों द्वारा हो रहे हैं। आज भी ब्रिटेन, चीन, भारत और रूस और कई देशों में बिजली–उत्पादन का बड़ा भाग कोयले पर ही निर्भर है।

कार्बन–उत्सर्जन कम करने के लिए हमें विश्व में बिजली का उत्पादन परमाणु शक्ति से करना चाहिए। इसके लिए विश्व को युरेनियम चाहिए और युरेनियम पाना बहुत कठिन है, क्योंकि सबसे पहले उक्त देश को न्यूक्लियर सप्लायर–समूह का सदस्य होना चाहिए। आज न्यूक्लियर सप्लायर–समूह एक क्लब बन गया है। आपसी मतभेदों के कारण कुछ देश अन्य देशों को क्लब का सदस्य बनने पर आपत्ति करते हैं।

भारत को न्यूक्लियर सप्लायर–समूह के सदस्य बनने के लिए चीन विरोध करता है और इस संकट के कारण भारत परमाणु ऊर्जा की दिशा में नहीं बढ़ सकता है। ऐसे में भारत शून्य कार्बन–उत्सर्जन के लक्ष्य की दिशा में अग्रसर नहीं हो सकता है।

आज अपने वायु प्रदुषण को कम करने के लिए मॉरीशस सिविल सेवकों को इलेक्ट्रिक कार खरीदने के लिए कर छुट आर्थिक सुविधा दे रहा है।

विकसित देशों को विकासशील देशों के लिए बोझ नहीं बनना चाहिए। विकसित दशों को शून्य कार्बन–उत्सर्जन प्राप्त करने के लिए समान रूप से योगदान देना चाहिए। दुनिया खतरे में है।

सत्यदेव टेंगर

शिव खेड़ा के अनमोल विचार

हमारी बिजनेस से सम्बंधित समस्याएं नहीं होतीं, हमारी लोगों से सम्बंधित समस्याएं होती हैं ।

अगर हम हल का हिस्सा नहीं हैं, तो हम समस्या हैं ।

Augmentation des prix (8-10%) des produits de consommation courante dans les jours à venir

Possibilité d'une pénurie de l'huile comestible dans les jours à venir

L'imminence d'une pénurie d'huile comestible sur le marché mauricien se précise de plus en plus. Durant le weekend dernier, les étagères de certains supermarchés 'dits gagnants' étaient quasiment vides. Ce qui a précipité les consommateurs de tomber sur les quelques bouteilles qui en restaient. Cette situation est provoqué selon certaines informations par les trois importateurs /producteurs de cette commodité essentielle dans la cuisine pour pousser le gouvernement ....*Suite à la page 12*

Economie : Faut-il être satisfait ?11

Editorial - 2

Opposition : difficile d'une réunification

साठोत्तरी हिन्दी कविता 6

Le MSM requinqué12

दिल की बात 2

Le tourisme reprend du poil de la bête, mais... 12

कार्य क्षेत्र में नारी स्थिति के संदर्भ में मन्नू भंडारी का दृष्टिकोण 3

सिंहावलोकन

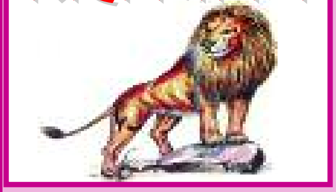

मॉरीशस की प्रस्तुत पीढ़ी के लगभग समस्त हिन्दी के नामी साहित्यकार साठ–सत्तर पार कर चुके हैं। नयी पीढ़ी के मॉरीशसीय हिन्दी के साहित्यकार कम नज़र आ रहे हैं। कितना अच्छा होता यदि भारतीय उच्चायोग के सौजन्य से भारत के दो–तीन प्रसिद्ध हिन्दी के साहित्यकार – आलोचक विश्व हिन्दी सचिवालय पधारकर लेखन–कार्यशालाओं का सप्ताह भर आयोजन करते। जैसे पहले भी अज्ञेय, डॉ नामवरसिंह, डॉ क. क. गोयनका आदि पधार चुके हैं। यह संभव है !

EDITORIAL

Opposition : difficile d'une réunification

A qui profite la division au sein de l'opposition ? Sans doute le MSM se réjouit de cette situation, mais entre les trois partis qui constituent l'opposition parlementaire, soit le Ptr, le MMM et le PMSD, il semble que tant que la situation ne décante pas et le statu-quo se maintient , c'est toute l'opposition qui sera perdante.

Paul Bérenger a sans doute regretté sa démarche en février dernier. Certes, il n'est pas seul à pousser Navin Ramgoolam vers la sortie de la plateforme de l'opposition, mais déjà on sait que c'est lui le maestro dans cette décision. Paul Bérenger, lors de ses rencontres avec les membres de son bureau politique émet toujours des souhaits que le Ptr fasse partie d'une grande alliance de l'opposition. Car il sait que le MMM perd de plus en plus en popularité. Les récentes démissions en témoignent.

Au sein du Ptr, c'est Ramgoolam qui décide. Avec sa maladie , personne n'a osé le petit doigt pour parler d'une éventuelle alliance. Ils ont tous affirmé qu'il n'y aucun changement et en temps et lieu, la question d'alliance sera évoquée. Comprenez par- là que quand Ramgoolam sera totalement remis, c'est lui qui prendra la décision.

Toutefois, l'alter ego de Navin Ramgoolam, Patrick Assirvaden a lui lancé un pavé dans la mare. Avant de parler alliance, il faut que le poste de leader de l'opposition soit retourné à ArvinBoolell et celui de whip à Shakeel Mohamed, at-il dit. Une déclaration qu'il a faite lors d'une réunion politique et qui a été reprise par des titres de presse. Une déclaration pas appréciée par Xavier Duval qui estime qu'il ne veut pas discuter d'une telle demande dans les journaux. Et Paul Bérenger qui ajoute son grain de sel. « Oui je suis toujours en faveur d'une alliance de l'opposition, mais pas à n'importe quel prix ».

Au Parlement, comme on a remarqué le mardi 26 octobre dernier, les trois partis de l'opposition sont sur la même longueur d'onde. Comme cela a été le cas depuis novembre 2019. Mais en dehors il n'y pas cette vraie harmonie entre eux. ArvinBoolell est présent devant le Parlement pour protester contre sa suspension. Aucun membre du MMM ou du PMSD ne s'intéresse à sa démarche. Et pourtant rient ne les empêche de venir le saluer. ArvinBoolell qui était venu à la rescousse de Xavier Duval juste avant sa suspension se retrouve esseulé à part de ses amis du parti.

Et on se demande si une alliance de l'opposition est possible ? La maladie de Navin Ramgoolam et ses rencontres avec des dirigeants du parti au pouvoir en Inde pousse encore à dire qu'une alliance entre le Ptr, le MMM, le PMSD de RoshiBadhain et du RM de NandoBodha devient de plus en plus compliqué. En tout cas, c'est Navin Ramgoolam, celui qu'on a poussé vers la sortie qui a la carte du joker.

Suttyhudeo Tengur

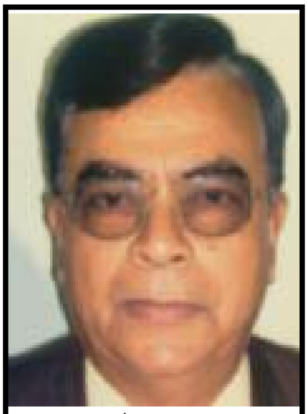
डॉ॰ बीरसेन जागासिंह

दिल की बात

हिन्द महासागर में स्थित नन्हा द्वीप उपनिवेश मॉरीशस को स्वतन्त्र करने से पूर्व ब्रिटिश सरकार ने एक सर्वेक्षण के बाद अभिमत प्रकट किया था, कि स्वतन्त्रता प्रदान कर देने के बाद जब ब्रिटिश सरकार का वरद हस्त मॉरीशस के सिर से हट जाएगा, तब यहाँ भुखमरी फैल जाएगी। न यहाँ कोई उद्योग था, न खनिज पदार्थ, न अंतरराष्ट्रीय कोई व्यापार, शक्कर के कारखानों के अलावा न कोई अन्य कारखाना, न उत्पाद ! मात्र चाय, तम्बाकू और चीनी पैदा करके कैसे स्वतन्त्र मॉरीशस अपनी नौ–लाख की आबादी का पेट पालता। समस्त खाद्य पदार्थ तो आयात करना पड़ता है।

ब्रिटिश सरकार का कहना उस समय सोलह आने सत्य था। यही कारण था कि स्वतन्त्रता के विरोधी दल वालों ने उस समय ब्रिटिश साम्राज्य में सदस्यता की माँग की थी। माँग जिसे पूरा करना असम्भव था, क्योंकि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की ब्रिटेन की आर्थिक तबाही कभी सुधरी ही नहीं। जल्द–से–जल्द उपनिवेशों से ब्रिटेन हाथ धोना चाहता था। भारत की बारी पहले आयी। फिर एक–एक करके अफ़्रीकी और करेबयायी उपनिवेश स्वतन्त्र होते गए। अतः मॉरीशस चाहे राष्ट्र कुल के सदस्य स्वरूप ही क्यों न था परन्तु ब्रिटेन की छत्र–छाया पा जाने का प्रश्न ही नहीं उठता था। ब्रिटिश प्रधान–मंत्री सर हारोल्ड विल्सन के नेतृत्व में यह निर्णय लिया गया था कि स्वेज़ कानाल के पूरब के समस्त ब्रिटिश उपनिवेशों को स्वतंत्र किया जाए। मात्र युद्ध की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण – ज़िब्रालतार, मालवीन आदि समुद्र पार ब्रिटिश स्थलों पर अधिकार जमाए रखा जाना था। बाद में मॉरीशस को स्वतंत्र करने से पूर्व जिएगो गार्सिया को गैर कानूनी रूप से ब्रिटेन ने हथिया लिया था। मॉरीशस को डॉ. सर शिवसागर रामगुलाम जैसे बिहारी गिरमिटिये के पुत्र के हाथों स्वतंत्र होना था।

डॉ. रामगुलाम ने समय के साथ अनेक देशों से मित्रता बनाये रखकर मॉरीशस को आर्थिक रूप से समृद्ध किया। उन्होंने ऐलान किया कि मॉरीशस अफ़्रीका का हिस्सा है। वे युरोपीय साझा मंडी में पूर्व निश्चित मूल्य में शक्कर निर्यात करने लगे थे। विश्व मंडी में शक्कर का मूल्य घट जाने पर भी मॉरीशस को वर्षों तक पूर्व में निश्चित दुगुना दाम मिलता रहा। मॉरीशस की समृद्धि के पीछे यह एक प्रमुख कारण है। पर्यटन उद्योग बिन चिमनी–धुएँ के सोना उगलनेवाला उद्योग बन गया। फ़्री पोर्ट की स्थापना से आज भी पर्याप्त द्रव्य मिल रहा है।

ढेर सारे उद्योग– धंधे– कारखाने स्थापित हुए। निर्यात बढ़ा और श्रमिकों की कमी हो चली। भारत और बांग्ला देश से तीस–चालीस हज़ार श्रमिक आयात किए गए। और अंगूठी में मूल्यवान नगीने के समान पूर्वजों के पूज्य भारत देश का बिना शर्तों का मॉरीशस के सिर पर वरद हस्त है। भारत की सरकार और जनता मॉरीशस की सरकार और जनता पर सुरक्षा, आर्थिक सहयोग, करोड़ों का अनुदान और बिन ब्याज का लॉन, छात्रवृत्तियों और सहायता की मुसलाधार वर्षा करती रहती है। हम मॉरीशस वासी निर्मोही संसार में अनाथ नहीं हैं।

(शेष भाग पृष्ठ ४ पर)

Administration
6, Edith Cavell St ,
Port-Louis, Mauritius
Tel :- 212-7544
Website: www.ghtu.mu
Director & Editor in chief:
Suttyhudeo Tengur
मुख्य संपादक
सत्यदेव टेंगर
Impression:
Vani Printing Ltd

डॉ. सचिन कुमार

कार्य क्षेत्र में नारी स्थिति के संदर्भ में मन्नू भंडारी का दृष्टिकोण

हमारी सामाजिक व्यवस्था में अर्थ, ज्ञान और शारीरिक बल, ये मुख्य तीन कारण हैं, जो पुरुष का वर्चस्व स्थापित करते हैं, जिनके परिणाम स्वरूप नारी धीरे–धीरे पराधीन होती गई; उसका कार्यक्षेत्र घर और परिवार तक सीमित माना गया। समाज की समस्त मर्यादा, आदर्श एवं नैतिकता उसी के लिए रह गयी। नारी के इतिहास पर नज़र डालते हैं, तो पाते हैं, कि प्राचीन काल से स्फुटनिक युग तक नारी, पुरुष के जीवन का पोषण एवं उन्नयन करती रही है। लेकिन पुरुष ने उसे देवी कहकर उसके अधिकारों से वंचित रखा। उसे पत्थर की मूर्ति बना दिया और उसके मानवी जीवन को नकार दिया। उसके हिस्से में रह गया केवल समर्पण। ''स्त्री की नियति थी, पुरुष की अधीनता प्रकृति की भाँति उसका भी शोषण पुरुष ने किया। जिस सम्मान को वह भोगती थी, वह पुरुष का दिया हुआ था। पुरुष के हाथ प्रार्थना में देवी के सामने झुके, लेकिन उस देवी का निर्माता वह स्वयं था। वह यदि स्त्री को देवी के पद पर आसीन कर उसकी स्तुति कर सकता था, तो देवी को छिन्न–छिन्न करने की ताकत भी उसके पास थी।''48 लेकिन स्वतंत्र भारत की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक थी, नारी की चारदीवारी से मुक्ति। स्वतंत्रता के बाद भारत की बदलती हुई स्थितियों में नारी केवल माँ, प्रेयसी, और पत्नी ही नहीं अपितु वह एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक शक्ति के रूप में अपनी पहचान बना चुकी है। वह अब केवल रमणी या पत्नी ही नहीं, बल्कि घर के बाहर समाज का एक विशेष अंग है। इस युग की नारी ने शिक्षा ग्रहण करके सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों में काफ़ी तरक्की कर ली है। कार्यक्षेत्र में उपस्थित होकर अपने व्यक्तित्व एवं अस्तित्व के प्रति जागरूक हुई है।

स्वावलंबिनी होने के कारण वह यह अनुभव करती है, कि उसे अधिकार चाहिए, निर्णय लेने का, राह चुनने का, सन्तान के भविष्य का। किन्तु पुरुष युगों से प्राप्त अपने अधिकारों को इतनी जल्दी नहीं छोड़ पाता है; अतः दोनों के अधिकारों में टकराव शुरू हो जाता है। स्वतंत्र व्यक्तित्व की खोज में नारी को सबसे पहले परंपरागत मूल्यों के साथ जूझना पड़ता है। पूर्ण मुक्ति के लिए नारी प्रयत्न अवश्य करती है, परन्तु पुराने संस्कारों के कारण उसे पूर्ण मुक्ति नहीं मिलती। इस परम्परावादी समाज से निर्मित शिक्षित नारी के सामने नई समस्याएँ उभरने लगी हैं, उसे दो तरह की भूमिकाओं का सामना करना पड़ता है, एक पत्नी के रूप में तो दूसरी उपार्जन करनेवाली नारी के रूप में। आर्थिक स्वतंत्रता ने नारी के सम्मुख नई समस्याएँ उत्पन्न कीं। जहाँ वह पहले अपने अहं की हत्या करके समझौता करने के लिए तैयार हो जाती थी, वहीं आज परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने के लिए वह संघर्ष करती है। वह पति की सिर्फ़ 'भोग्या' बनने को तैयार नहीं है, बल्कि वह उसकी मित्र उसकी सहचर बनना चाहती है। महिला कथाकार नारी–पुरुष की समानता में विश्वास रखती है और मन्नू भंडारी भी नारी–पुरुष की समानता की अपवाद नहीं है। वह व्यर्थ के भावोच्छवास में नारी के आँचल का दूध और आँखों का पानी दिखाकर पाठकों की दया नहीं वसूलती। वह यथार्थ के धरातल पर नारी का, नारी की दृष्टि से अंकन करती है। स्वयं लेखिका मन्नू भंडारी भी अध्यापिका तथा प्राध्यापिका रही हैं। इसीलिए उन्होंने घर–परिवार और नौकरी के बीच छटपटाती नारी की समस्याओं को अनुभव किया है। वह अपनी स्थिति के माध्यम से कामकाजी नारी की स्थिति के विषय में लिखती हैं–''बेटी और घर (जिसकी पूरी–पूरी ज़िम्मेदारी मेरे ऊपर थी) के साथ नौकरी जो अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाने के लिए अनिवार्य थी। यही नौकरी पेशा नारी की स्थिति है।''

''आपका बंटी'' उपन्यास की ''शकुन'' एक मध्यवर्गीय समाज में पढ़ी–लिखी अपने पैरों पर खड़ी नारी है, जो त्याग करना नहीं चाहती। वह बदलते सामाजिक परिदृश्यों का डटकर मुकाबला करते हुए आगे बढ़ना चाहती है और पुरुष के समान समाज का उपयोगी अंग बनना चाहती है। भारतीय समाज में परिवार की एक परम्परा है, उस परम्परा को बनाये रखने की ज़िम्मेदारी नारी पर अधिक है। प्राध्यापिका शकुन इन्हीं सब परम्पराओं से जूझती, जुड़ती, जुड़कर टूटती, टूटकर जुड़ने का प्रत्यन करती रहती है। शकुन का पढ़ा–लिखा होना और कार्यक्षेत्र में उसकी स्थिति मज़बूत होना अजय के अहं को चोट पहुँचाता है। इसलिए अजय के साथ तनाव भरे माहौल में रोज़–रोज़ अपने व्यक्तित्व को दबाते हुए चलना उसे स्वीकार्य नहीं। अपने व्यक्तित्व को कायम रखने के लिए वह अजय से अलग हो जाती है। अगर शकुन की जगह पर कोई अशिक्षित रूढ़िवादी संस्कारों से परिपूर्ण नारी होती तो कई बार अपमानजनक समझौतों को सहन करते हुए भी दाम्पत्य की गाड़ी खींच ले जाती। लेकिन शकुन तो कालेज की प्रिन्सिपल है, उसकी कार्यक्षेत्र में स्थिति अच्छी है, सो समझौता करने का प्रश्न ही नहीं उठता? ''समझौते का प्रयत्न भी दोनों में एक अंडरस्टैडिंग पैदा करने की इच्छा से नहीं होता था, वरन् एक–दूसरे को पराजित करके अपने अनुकूल बना लेने की आकांक्षा से। तर्कों और बहसों में दिन बीतते थे और ठंडी लाशों की तरह लेटे–लेटे दूसरे को दुखी, बेचैन और छटपटाते हुए देखने की आकांक्षा में रातें।

(शेष भाग पृष्ठ ४ पर)

(पृष्ठ २ का शेष भाग)

जहाँ भी दृष्टि फैलती है, चहुँ ओर मॉरीशस भर में आज नवनिर्माण दृष्टिगोचर होते हैं। सुप्रीम कोर्ट भवन, ई.एन.टी. अस्पताल, जवाहरलाल नेहरू अस्पताल, मेट्रो, आम जनता के लिए घर, विश्व हिन्दी सचिवालय आदि सभी भारत सरकार द्वारा मुफ़्त में दान स्वरूप उपलब्ध हुए हैं। भारत माता हम मॉरीशन बच्चों को देते नहीं थकती है। मॉरीशस सदा कृतज्ञ रहेगा। संसार के समस्त अन्य देशों से अत्यधिक कृपा, सहयोग, सहायता, सुरक्षा एवं अपनापन मॉरीशस को भारत ही से मिलता रहा है। ब्रिटिश सरकार ने जो भविष्यवाणी की थी, कि स्वतंत्र मॉरीशस में भुखमरी छा जाएगी, भारत जैसे मित्र देश के कारण ही झूठ साबित हुई। जय मॉरीशस। जय भारत।

डॉ॰ बीरसेन जागासिंह
विश्व हिन्दी सम्मान
–न्यू यॉर्क २००७
beersen.jugasing@icloud.com

(पृष्ठ ३ का शेष भाग)

''50 अजय से शकुन का अलगाव उन सम्बन्धों की रिक्तता को स्पष्ट करता है, जो प्रेम पर नहीं अहं पर टिके होते हैं। शकुन ऐसे रिश्ते से मुक्त होती है तो मात्र व्यक्ति–स्वातन्त्र्य की चेतना के कारण ही। लेकिन अलग होने के बाद शकुन की संतान बंटी भी उसकी स्वतंत्रता में बाधा डालने लगती है।

इस परिस्थिति में शकुन डॉ0 जोशी से विवाह करने और संतान के प्रति ईमानदार रहने के सन्दर्भ में कहीं भी तालमेल नहीं बिठा पाती है। परिणामस्वरूप संतान बंटी के हालात त्रिशंकु जैसे हो जाते हैं। शिक्षित नारी–पुरुष के संबंधों की स्थिरता पर इस समय एक प्रश्न चिह्न लग गया है, जहाँ नारी की कार्यक्षेत्र में स्थिति पुरुष के समकक्ष या उससे उत्तम होती है, तो वहाँ पुरुष की अहं–वृत्ति उसे स्वीकार नहीं पाती। क्योंकि प्रा. चीन काल से ही पुरुष–सत्तात्मक समाज की मानसिकता नारी तेजस्विता को सहजता से स्वीकार नहीं कर पायी है, फलस्वरूप दाम्पत्य जीवन की दीवारें धीरे–धीरे ढहने लगती हैं। शकुन की कार्यक्षेत्र में स्थिति का मज़बूत होना ही पति–पत्नी के बीच होनेवाले अलगाव का प्रमुख कारण है। अगर शकुन आर्थिक रूप से मज़बूत न होकर अजय पर आश्रित होती, तो हो सकता था कि तलाक न होता और संतान बंटी को माता–पिता दोनों का प्यार मिलता। कार्यक्षेत्र में नारी की स्थिति ने विशेषकर मध्यवर्ग के मानसिक ढाँचे को हिला दिया है। यह वर्ग एक ओर तो चाहता है कि नारी नौकरी करे घर की देखभाल करे, किन्तु दूसरी ओर इससे अपना आत्मसम्मान आहत पाता है। इन्हीं समस्याओं से जूझती है ''एक इंच मुस्कान'' उपन्यास की ''रंजना''। रंजना और अमर के संबन्धों में तनाव का कारण है, रंजना की कार्यक्षेत्र में स्थिति और अमर का लेखकीय व्यक्तित्व। रंजना अध्यापिका है, वह अध्यापकीय जीवन पहले अपनी इच्छा से स्वीकार करती है, लेकिन विवाह के बाद परिवार की ज़िम्मेदारियों को निभाने के लिए अध्यापन कार्य करना उसकी मजबूरी बन जाता है। कार्यक्षेत्र में स्थिति के कारण उसका विवाहित जीवन सुखी नहीं रहता है। परिवार की सुख–शान्ति के लिए रंजना हर संभव कोशिश करती है। इस कोशिश में वह अपनी संतान को भी जन्म लेने से पहले ही त्याग देती है। उसके सारे प्रयास निष्फल ही रहते हैं। पुरुष प्रधान समाज नारी के इस सराहनीय रूप को शंका की दृष्टि से देखता है। अमर रंजना से कहता है–''तुम कमाओगी, काम करोगी और मैं बैठा–बैठा खाऊँगा। इसे मेरा अहं कैसे स्वीकार करेगा''51 वास्तव में ही अमर का अहं रंजना की कार्यक्षेत्र की स्थिति को स्वीकार नहीं कर पाता, बात–बात पर अर्थ–मूल्य की दृष्टि से स्वयं को अपदस्थ मानकर हीन भावना से ग्रस्त ही पाता है। एक दिन अमर कहानी के माध्यम से रंजना को भारतीय पत्नी की विशेषताओं को समझाता है, तो रंजना भी अमर की मनोदशा को समझते हुए उसे चड्ढा और उसकी कमानेवाली पत्नी रतन की कहानी सुनाकर एक–दूसरे के कार्य में सहयोग करनेवाले पति–पत्नी के गुणों का वर्णन करती है, साथ ही पति के सहयोग पर विशेष बल देती है। कहानी सुनकर अमर को विश्वास हो जाता है कि यह कहानी खास मुझे केन्द्र में रखकर बनायी गयी है। रंजना के कालेज चले जाने के बाद अमर सोचता है–''मेरा काम घर पर बैठकर करने का है और रंजना का स्कूल में जाकर पढ़ाने का–बात इतनी ही नहीं है। इसकी जड़ीं परिणतियाँ और भी गहराई में हैं–मेरी हैसियत पति की है और कार्य पत्नी का''52 इस उद्धरण से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि अमर के अन्दर एक पुरानी रूढ़िवादी सोचवाला पति ज़िन्दा है, जो पत्नी रंजना की कार्यक्षेत्र में स्थिति को सहन नहीं कर पाता। बार–बार उसका अहं आहत होता है। अमर का यही अहं, उसकी यही सोच, उसके और रंजना के सम्बन्धों में कड़वाहट लाती है। रंजना आधुनिक नारी है, जो अपने व्यक्तित्व के प्रति सजग एवं संवेदनशील है। पारिवारिक जीवन की ज़िम्मेदारियों को वह पूरी ईमानदारी के साथ निभाना चाहती है, पर इसके लिए पुरुष का साथ, उसका सहयोग भी ज़रूरी है, जो रंजना को नहीं मिलता; इसलिए रंजना और अमर के मध्य टकराव रहता है। परिणाम स्वरूप दोनों में अलगाव हो जाता है। पारिवा. रिक जीवन तथा संतान के प्रति आकर्षण, ये सब ऐसे रूप हैं, जिनका सम्बन्ध अध्यापिका रंजना और प्राध्यापिका शकुन दोनों से है। समस्याएँ समान प्रतीत होने पर भी उनका निदान दोनों स्थितियों में अलग–अलग है। जहाँ अध्यापिका रंजना अपने संबंध को निभाने के लिए अपनी इच्छाओं को दबा देती है, वहीं प्राध्यापिका शकुन अपने वैचारिक तर्क द्वारा अपने संबंध को तोड़कर अंतर्द्वंद्व में उलझती रहती है। आज नारी की स्थिति में बदलाव आया है, शिक्षा के परिणाम स्वरूप नारी की छुपी प्रतिभा उभरकर सामने आयी है। उसके कार्यक्षेत्र का दायरा बढ़ा है। अब नारी में केवल पारिवारिक ज़िम्मेदारियों को वहन करने की ही क्षमता नहीं है, वरन् वह घर और बाहर की दोहरी ज़िम्मेदारियों को संभालने में सक्षम है। आवश्यकता है उसे अवसर प्रदान करने की।

डॉ. सचिन कुमार
डॉक्टरेट . हिन्दी विभाग,
अलीगढ़ मुस्लिम विश्व. विद्यालय

सहनशीलता

सहनशीलता एक मानवी गुण है। इसके बिना मानव कुछ अंश में दानव की श्रेणी में उतर आता है। काम बड़ा कठिन है, मगर असंभव नहीं। अपने को संयम के रास्ते पर अग्रसर करने से सफलता मिलेगी। लेनेवाले की दृष्टि होनी चाहिए। धरती माँ क्या नहीं सहती? खोद–खाद, काट–पीट, भीड़–भार का बोझ! मनुष्य अपने जीवन की सभी अवश्यकताओं की पूर्ति इसी से करता है। कभी ना और न, ना की भावना माँ धरती के चेहरे पर नहीं झलकती है। हमेशा प्रसन्न ही मुखड़ा लिए अपनी संतानों पर अपना सब कुछ लुटाती रहती है, लुटाती रहेगी और लुटाती ही रहेगी। मगर आधुनिक मानव का ध्यान उधर जाता ही कहाँ है? अपनी सफलता पर भूला है। मगर माँ धरती नहीं भूलती अपनी संतानों को।

धरती माँ के आगे जन्मदात्ती माँ को कहाँ भूला पाना संभव होता है। अपना सुख, चैन, नींद, आराम सब हराम करके अपनी संतानों को आगे बढ़ाती है। ऊपर उठाती है। माँ घर–गृहस्ती में संतान के साथ पूरे घर के सदस्यों की देखभाल बराबर करती रहती है। कोई शिकायत का अवसर ही नहीं आता। उन्हीं के संस्कारों से संसार का मानव, मानव की श्रेणी में आता है। रामायण काल की घटनाएँ भी सराहनीय स्थान रखती हैं। सहनशीलता की जड़ तो हमारे आदर्श पुरुषों, विदुषियों के समय से चलती आ रही है। रावण ने सीता का हरण किया। श्रीराम–लक्ष्मण विचलित हो जाते हैं। उनके पास बल था, साधन थे। फिर भी अचानक कोई गलत कदम नहीं उठाते हैं। हनुमान द्वारा सीता का पता चल जाता है। आक्रमण करके सीता को ला सकते थे। मगर नहीं, अंगद को शांति दूत बनाकर भेजा। पहले मीठे व्यवहार से समझाना चाहते हैं। अनेक मौके देते हैं कि अब सीधे तौर से सीता को लौटा देगा। मगर काम नहीं बना। सहनशीलता सीमा बाँधना चाहती है। और अंगुली टेढ़ी करनी पड़ती है। उधर माता सीता भी धीरज और साहस से काम लेती हैं। बराबर अपना दैनिक संध्या, पूजा–पाठ यही सोचकर करती है कि एक दिन उसका फल मीठा होगा और हुआ भी, सर्वविदित बात है।

हमारे धार्मिक ग्रन्थ तो ऐसे उदाहरणों से भरे पड़े हैं। वैदिक काल से लेकर वर्तमान काल तक उसका पालन हो रहा है। अब महाभारत की बात को ही लें। शिशुपाल का वध अचानक नहीं हुआ। योगीराज श्री कृष्ण महाराज ने निन्यानबे गालियाँ सहीं। सौवीं गाली निकलते ही सुदर्शन चक्र में गति आ गई और शिशुपाल वध हो गया। साधारण मानव में ऐसी सहनशीलता नहीं होती। एक ज़बरदस्त उदाहरण है। साधारण मानव को ऐसे उदाहरणों को याद करना चाहिए। हमारे साधु–संन्यासी कितने सताये गये हैं। पत्थरों की वर्षा को फूलों की वर्षा कहा था, महर्षि दयानंद ने। किसी महात्मा पर कीचड़ उछाला गया। बार–बार उछाला गया मगर चेहरा मुस्कुराता ही रहा। भारतीय संस्कृति की यह देन संसार ग्रहण कर रहा है, क्योंकि यह विश्व गुरु आर्यावर्त्त की देन है। पृथ्वी का हर कोना आर्यावर्त्त के महर्षि–महर्षियों का रौंदा हुआ है। हम मॉरीशस राष्ट्र के वासी हैं। यहाँ आकर बस गए, या बसाये गए। यहाँ धर्म–संस्कृतियों की अनेक शाखाएँ हैं। सभी अपने–अपने राग अलापते हैं। जिस देश में एक भाषा, एक संस्कृति है, वहाँ भी लोग अपने को ही सहन नहीं कर पा रहे हैं। आपस में लड़ते–झगड़ते रहते हैं। शांति तो क्षितिज पार कर गई, पर मॉरीशस में इस छोटे से टापू में भाषाओं और संस्कृतियों का मेला है। फिर भी अपनी सहनशीलता बनाये हुए हैं। अन्य धर्मावलम्बी कभी फिसल जाते हैं, तो होता क्या है, सभी हमारी ओर ललचायी नज़रों से देखते हैं। हमारा धर्म, हमारी संस्कृति से प्रभावित होते हैं, और शांति के पथ पर अग्रसर हो जाते हैं।

कभी–कभी ऐसा भी होता है, एक दूसरे को सह नहीं पाते हैं। फिर भी गम खाकर स्वीकारना पड़ता है, क्योंकि जो हम चाहते हैं, पूरा नहीं होता। बाहर की दुनिया से सहनशीलता का ध्यान करके मानना पड़ता है, जिसका फल मिठास भरा ही होता है। यही कारण है कि हम पर किसी की बनी–बनायी योजना धराशयी हो जाती है, क्योंकि हम मन से इसमें लग जाते हैं। बनावटी प्रेम से हानि होती है। मन से निकली बात मन में समाती है। मन से किया व्यवहार मन में असर करता है।

सहनशीलता नम्रता के अधीन है। नम्रता के क्षेत्र में भी हमारे पूर्वजों की शिक्षा ही काम आती है। भारत से दूर इस टापू में भी कष्टों का सामना करके इसको बनाये रखा। जिसको काम में लाने से हम भी मज़े में हैं। गाँधी जी ने मॉरीशस–यात्रा पर कहा था कि सभी भाषाओं का अध्ययन अनिवार्य है। उसका प्रयोग हुआ। सफलता मिली। इसीलिए सहनशीलता की शरण में शांति मिलती है। सभी का आशीर्वाद आप पर रहेगा। इस व्यवहार को सभी अपने जीवन में उतार कर, हमें मानवीय गुणों को बनाये रखना है और संसार को अपना प्रेम बाँटते रहना है।

सोनालाल नेमधारी
आर्य भूषण

हमारा स्वास्थ्य

पूरी, चावल–भात, समोसे और पराठे,
तला–भुना खा–खाकर लगाएँ ठहाके।
परिश्रम करने से, जो जन घबराते हैं,
अधिक देर तक सोते और खूब खाते हैं,
पाचन होता मंद, कोलेस्ट्रोल जम जाता है।
ऐसा सज्जन निश्चित, मोटा हो जाता है।
मोटापा नहीं, रोग है, है रोगों का घर !
गैस, कब्ज़ और मधुमेह या जोड़ों में दर्द !
इनके साथ–साथ, रक्तचाप बढ़ जाता है,
केंसर, हृदय–रोग या दमा पाया जाता है,
गुर्दे व रीढ़ का भी, कारण इसको जान,
इनसे बचने के लिए, करो मोटापे का
कल्याण !

डॉक्टर विनय सितिजोरी पी.एच.डी.

साठोत्तरी हिन्दी कविता : प्रमुख कवि संक्षिप्त परिचय (अंतिम भाग)

शलभ श्रीराम सिंह – न.फ़स–न.फ़स कदम–कदम .... बस एक फ़िक्र दम–ब–दम .... घिरे हैं हम सवाल से, हमें जबाव चाहिए.... जबाव दर सवाल है कि इन्कलाब चाहिए'' प्रधानमंत्री बनने से पूर्व चन्द्रशेखर द्वारा 1985–86 में निकाली गई पद–यात्रा के दौरान रची गई यह कविता लोगों के मन में क्रान्ति–ज्वाला भड़काने की क्षमता रखती थी। इसकी चर्चा होते ही शलभ श्रीराम सिंह का अक़्स ज़ेहन में बरबस उभर आता है। युयुत्सावादी जहाज़ के पहले और अन्तिम कप्तान शलभ श्रीराम सिंह का जन्म 5 अक्टूबर, 1938 को उत्तर प्रदेश के अम्बेडकर नगर, ज़िले जलालपुर तहसील के मसोढ़ा नामक गाँव में हुआ था। इनकी शिक्षा सिर्फ ग्यारहवीं तक ही हुई थी। रूपाभ, अनागता, युयुत्सा आदि पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। ये माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार से सम्मानित भी थे। इनकी बीड़ी कभी बूझती नहीं थी और मदिरा से गहरी मित्रता थी। इनकी मृत्यु 23 अप्रैल 2000 में हुई। काव्य संग्रह – कल सुबह होने से पहले (1966), अतिरिक्त पुरुष (1976), त्रयी 2 (1977), राहे–हयात् (1982), नागरिक नामा (1983), अपराधी स्वयं (1985), पृथ्वी का प्रेमगीत (1991), ध्वंस का स्वर्ग (1991), उन हाथों से परिचित हूँ मैं (1993), ऊँगली बंधी हुई नदियाँ (1995), जीवन बचा है अभी (1996) आदि।

•शैलेश ज़ैदी – 16 अगस्त 1943 को भीरजापुर उत्तर प्रदेश में जन्मे शैलेश ज़ैदी एम.ए.,पी.एच.डी. करने के उपरान्त अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्रोफ़ेसर हुए और यहीं से सेवानिवृत्त भी हुए। काव्य संग्रह – चाँद के पत्थर (1970), सूरज एक सलीब (1981), अब किसे वनवास दोगे ? (1984), हंसी फूटने के बाद (1988), कोयले दकहते हैं, आदि।

•शशिप्रभा – जीवन की कटु सच्चाइयों को अपने कविता में उभारनेवाली कवयित्री शशिप्रभा का जन्म 7 जुलाई 1949 को रो. हतक, हरियाणा हुआ है। एम.ए., पी.एच.डी. के उपरान्त इन्होंने लेखन और प्राध्यापन का व्यवसाय चुना। काव्य संग्रह– आइनों से झाँकते अक़्स (2003), घने अंधेरे में भी (2005), तेरा किस्सा– मेरा किस्सा (2007), बहुत कुछ अनुत्तरित (2011) आदि।

•श्यौराज सिंह बेचैन – 5 जनवरी 1960 को नदरौली (बदायूं) उत्तर प्रदेश में जन्मे बेचैन का जन्म दलित समाज में हुआ था, जो मुर्दा मवेशी को उठाकर चमड़ा उतारने का काम करते थे। इनकी शिक्षा एम.ए., बी. एड., पी.एच.डी. और डी.लिट है। शिक्षा पूर्ण होने के उपरान्त ये दिल्ली विश्वविद्यालय में प्राध्यापन का कार्य करने लगे। काव्य संग्रह– बारहमासी (1982), नई फ़सल (1988), क्रौंच हूँ मैं (1996) आदि।

•श्रीकांत वर्मा – गीतकार, कथाकार, समीक्षक श्रीकांत वर्मा का जन्म 18 सितम्बर 1931 को विलासपुर (छत्तीसगढ़) में हुआ। एम.ए. करने के उपरान्त दिल्ली चले आये और दिनमान में विशेष संवाददाता रहे। यह राज्यसभा सदस्य, तुलसी पुरस्कार, शिखर सम्मान, नन्ददुलारे बाजपेयी पुरस्कार, कुमारआशान पुरस्कार और मगध काव्य संग्रह के लिए 1987 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाज़े गए। 25 मई 1986 को इन्होंने इस दुनिया का छोड़ा। काव्य संग्रह – भटका मेघ (1957), दिनारम्भ (1967), माया दर्पण (1967), जलसाघर (1973), मगध (1980), गरूड़ किसने देखा (1987), संचयिता आदि।

•श्रीराम वर्मा – निराला पुरस्कार से सम्मानित और चौथे तार सप्तक के प्रमुख कवि श्रीराम वर्मा का जन्म 1 मार्च 1937 को पतनई, आजमगढ़ उत्तर प्रदेश में हुआ था। एम.ए. पी.एच.डी. के बाद इन्होंने अध्यापन और सम्पादन का कार्य किया। इनकी मृत्यु 10 फ़रवरी 2003 को हुई। काव्य संग्रह – ग्रीनविच (1972), शब्दों की शताब्दी (1978), काल पात्र (1980), आत्मकथा (1981), बूँद की यात्रा (1985), गली का परिवेश (2003) आदि।

•सुमित्रानन्दन पंत – हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तम्भों में से एक सुमित्रानन्दन पंत का जन्म 20 मई 1900 को कौसानी, बागेश्वर (अल्मोड़ा) उत्तराखण्ड में हुआ। इनके बचपन का नाम गुसाई दत्त था। माँ के निधन के बाद इनका पालन–पोषण इनकी दादी ने किया। ये सात भाई–बहनों में सबसे छोटे थे। म्योर कालेज से 12 वीं पास करने के लिए इलाहाबाद आये और यहाँ आकर अपना नाम गुसाई दत्त से सुमित्रानन्दन पंत कर लिया। ये अरविन्द दर्शन से प्रभावित कवि हैं। इनकी मृत्यु 28 दिसम्बर 1977 को हुई। हिन्दी सेवा के लिए इन्हें पद्मभूषण (1961), ज्ञानपीठ (1968), साहित्य अकादमी (कला और बूढ़ा चाँद, 1960), सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार जैसे उच्च श्रेणी के सम्मानों से अलंकृत किया गया। काव्य संग्रह– उच्छवास (1920), ग्रन्थि (1920), वीणा (1927), पल्लव (1926), गुंजन (1932), युगान्त (1936), ग्राम्या (1940), स्वर्ण किरण (1997), स्वर्ण धूल (1947), युगपथ (1948), उत्तरा (1949), रजत शिखर (1951), शिल्पी (1952), अंतिमा (1955), वाणी (1957), सौवर्ण (1957), कला और बूढ़ा चाँद (1959), लोकायतन (1964), शंख ध्वनि (1971), शशि की तरी (1971), आस्था (1973), समाधिता (1973), गंधवीथी (1975), सत्यकाम (1975), गीत–अगीत (1977), मुक्ताभ (1977), संक्रान्ति (1977), मुक्ति यज्ञ, तारापंथ, मानसी, शिल्पी, पतझड़, ज्योत्स्ना अवगुंठित, मेघनाद वध आदि।

•सोहन लाल द्विवेदी – सोहनलाल द्विवेदी का जन्म 22 फ़रवरी 1906 को बिन्दकी, फ़तेहपुर (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। इनकी शिक्षा एम.ए., एल.एल.बी. तक हुई थी। इनका व्यवसाय वकालत और लेखन रहा है। इन्होंने बाल सखा, अधिकार आदि पत्रों के सम्पादन का भी कार्य किया। 1969 भारत सरकार ने पद्मश्री सम्मान से भी सम्मानित किया। यह कवि 1 मार्च 1988 को चिरनिद्रा में लीन हुआ। काव्य संग्रह – गान्ध्ययन (1970), भारत जय (1972), मुक्तिगंधार (1972), युगाधार (1975), संजी. वनी (1983), भैरवी, वासदत्ता, पूजागीत, विषपान, जयगांधी, सेवाग्राम आदि।

• सर्वेश्वर दयाल सक्सेना – 15 सितम्बर 1927 को बस्ती (उ0प्र0) में विश्वेश्वर दयाल के घर इनका जन्म हुआ। बी.ए., एम.ए. इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से किया। शिक्षा पूरी होने के बाद एजी ऑफिस में डिस्पैचर का काम किया। ऑल इण्डिया रेडियों के अलावा इन्होंने इलाहाबाद, दिल्ली, लखनऊ, भोपाल रेडियों में भी काम किया। 'दिनमान' और 'पराग' पत्रों का संपादन भी किया।

(शेष भाग पृष्ठ ७ पर)

(पृष्ठ ६ का शेष भाग)

23 सितम्बर 1983 को नई दिल्ली में इनका निधन हो गया। काव्य संग्रह – तीसरा सप्तक (1959), काठ की घंटिया (1959), बांस का पुल (1963), एक सूनी नाव (1966), गर्म हवाएँ (1966), कुआनो नदी (1973), जंगल का दर्द (1976), कविताएँ–एक (1978), कविताएँ–दो (1978), खूटियों पर टँगे लोग (1982), कोई मेरे साथ चले (1983), क्या कहकर पुकारूँ (1984) आदि।

•स्वर्ण किरण – 16 मई 1934 को आरा बिहार में स्वर्ण किरण का जन्म हुआ था। बी.ए., एम.ए. और पी.–एच.डी. के बाद इन्होंने अपने आप को प्राध्यापन और लेखन कार्य से जोड़ा। काव्य संग्रह – हिन्दी मिटा हुआ पत्रा (1961), कुएँ का उड़ाह (1961), कविताएँ स्वर्ण किरण की (1967), नचिकेता (1970), भीष्म (1970), सुलोचना (1970), मांडवी (1974), रत्नावली (1974), इन्दिरा गांधी (1995), नालंदा की वेदना (1976), निष्ण का सूर्य पुरुष मैं (1977), तुलसी (1997), बापू (1981), कवीन्द्र रवीन्द्र (1982), गौरव गिरि महान, यह कवि जी (1983), गंगा (1984), कौंध रहे वे क्षण (1990), ईश पुत्र ईशा (1990) आदि।

•स्नेहीमयी चौधरी – स्नेहमयी चौधरी का जन्म 9 मई 1934 को मौरावा उन्नाव उ0प्र0 में हुआ था। एम.ए., पी.एच.डी. करने के बाद जानकी देवी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य करने लगी। काव्य संग्रह – एकाकी दो (1966), पूरा गलत पाठ (1976), अपने खिलाफ़ (1982), चौतरफ़ा लड़ाई (1986) , हड़कम (2002) आदि।

•सौमित्र मोहन – अकविता आन्दोलन के प्रमुख कवियों में सौमित्र मोहन का विशेष स्थान है। इनका जन्म 2 जनवरी 1938 को लाहौर में हुआ था। एम.ए., पी.एच.डी. करने के उपरान्त ललित कला अकादमी के सहायक संपादक हुए। काव्य संग्रह – चाकू से खेलते हुए (1972), निषेध (1972), लुकमान अली तथा अन्य कविताएँ (1978)

•सुमन राजे – चौथे सप्तक की प्रमुख कवयित्री सुमन राजे का जन्म कानपुर में हुआ था। ये लखनऊ विश्वविद्यालय से एम. ए., और पी.–एच.डी. तथा कानपुर विश्वविद्यालय से डी.लिट थीं। इनका मुख्य व्यवसाय लेखन और प्राध्यापन था। इनका निधन 26 दिसम्बर 2008 को हुआ। काव्य संग्रह – सपना और लाशघर (1973), उगे हुए हाथों के जंगल (1987), यात्रा दंश (1988), एरका (1991), इक्कीसवीं सदी का गीत (1992) आदि।

•स्वदेश भारती – इनका जन्म 12 दिसम्बर 1939 को प्रतापगढ़ उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनकी शिक्षा इलाहाबाद, कोलक. ाता और अन्नामलाई विश्वविद्यालय में हुई। हिन्दी साहित्य सम्मेलन से इन्होंने डी.लिट की उपाधि प्राप्त की। बारह वर्ष की उम्र से ही इन्होंने कविता लिखना आरम्भ कर दिया था। 'औरतनामा' नामक कृति पर उ0प्र0 सरकार ने 'प्रेमचन्द सम्मान' (1981), मैसूर हिन्दी परिषद् ने 'हिन्दी सेवा सम्मान' (1994) एवं 2001 उ0प्र0 सरकार साहित्य से अलंकृत हुए। इनका निधन कोलकाता में 10 मार्च 2018 को बिड़ला हॉस्पिटल में हुआ। काव्य संग्रह– इक्कीस सुबह और (1969), आवाज़ों के कटघरे में (1974), तपिस मिटती नहीं (1976), मन चाहता है अपनापन (1981), दूसरा वामाचार (1983), भरे हाट के बीच (1987), सागर प्रिया (1988), कलकत्ता ओ कलकत्ता (1990), त्रासदी के द्वार पर (1991), सीढ़ियाँ चढ़ता सूर्य (1993), असमय की जर्जर नाव में (2001), अन्ततः (2002), मुंगेरी लाल का प्रजातंत्र (किसान महाकाव्य 2007), गिरती पत्तियों की मौन प्रतिध्वनि (2010), भागता हुआ समय (2011) आदि।

•सुनीता जैन– कवयित्री सुनीता जैन जन्म 13 जुलाई 1941 को अम्बाला (हरियाणा) में हुआ था। इनकी शिक्षा स्टेट यूनिवर्सिटी न्यूयार्क में हुई। ये आई.आई.टी. दिल्ली में प्राध्यापक थीं। ये पदम्श्री, व्यास सम्मान, साहित्यभूषण, महादेवी वर्मा, हरियाणा गौरव, विश्व हिन्दी सम्मान इत्यादि सम्मान से नवाज़ी गयी हैं। इनकी मृत्यु 11 दिसम्बर 2017 को हुई है। काव्य संग्रह – हो जाने दो मुक्त (1978), कौन–सा आसमान (1979), एक और दिन (1983), कितना जल (1986), रंग रति (1986), सूत्रधार सोते हैं (1995), कातर बेला (1995), सच कहती हूँ (1995), कहाँ मिलेगी कविता (1995), सुनो मधु किश्वर (1995), युग होते हैं और नहीं (1995), धूप हठीले मन की (1995), इस अकेले तार पर (1995), पौ फटने का पहला पक्षी (1996), मूंक करोति वाचालं (1996), सीधी कलम सधे न (1996), लेकिन अब (1996), जी करता है (1996), जाने लड़की पगली (1996), बोले तुम ही (1997), इतना भर समय (1998), हथकड़ी में चाँद (1998), गंगा तट देखा (1998), सुनो कहानी (2003), तरू–तरू डाल पे (2003), दसरे दिन (2003), जो मैं जानती (2003), चौखट पर व उठो माधवी (2006), प्रेम में स्त्री (2006), बारिश में दिल्ली (2007), इस बार (2007), खाली घर में (2007), लाल रिबन का फुलवा (2007), किस्सा तोता मैना (2007), गंधर्व पर्व (2008), क्षमा (2008), फैंटेंसी (2008), कुरबक (2008), लूओं के बेहाल दिन (2008), ओक भर जल (2009) हेरवा (2010), रसोई की खिड़की में (2010) आदि।

•सुरेन्द्र वर्मा – सुरेन्द्र वर्मा का जन्म 7 सितम्बर 1941 को झांसी में हुआ। भाषा विज्ञान में एम.ए. करने के बाद अपने को लेखन–कार्य से जोड़ा। प्राचीन और मध्यकालीन भारतीय इतिहास और संस्कृति में इनकी गहरी रूचि है। केन्द्रीय नाटक अकादमी, साहित्य अकादमी (मुझे चाँद चाहिए 1996), व्यास सम्मान (काटना शमी का वृक्ष : पद्य पंखुरी की धार से' उपन्यास, 2016) एवं भारतीय भाषा परिषद् द्वारा सम्मानित हैं। काव्य संग्रह – आइनों में चेहरे (ग़ज़ल 1983), आज के दशरथ (ग़ज़ल 1987), आइने बोलते हैं (ग़ज़ल 1999) आदि।

• स्वप्निल श्रीवास्तव – स्वप्निल श्रीवास्तव का जन्म 5 अक्टूबर 1954 को पूर्वी उत्तर प्रदेश जनपद सिद्धार्थ नगर में मेंहनौना गाँव में हुआ था। शिक्षा–दीक्षा गोरखपुर में प्राप्त कर उत्तर प्रदेश सरकार में मनोरंजन कर अधिकारी के पद पर सूबे के अनेक शहरों में नौकरी की। इन्हें इनके साहित्यिक अवदान के लिए 'भारतभूषण' (1986) और 'फ़िराक सम्मान' (2005) में मिल चुका है। काव्य संग्रह – ईश्वर एक लाठी (1982), ताख पर दियासलाई (1992), मुझे दूसरी पृथ्वी चाहिए (2004), ज़िन्दगी का मुकदमा (2010) आदि।

•सुशीला टाकभौरे – दलित लेखिका सुशीला टाकभौरे का जन्म 4 मार्च 1954 को बानापुरा, होशंगाबाद (म.प्र.) में हुआ था। एम.ए. और पी.–एच.डी. करने के बाद इन्होंने अध्यापन और लेखन कार्य से अपने आप को जोड़ा। काव्य संग्रह – स्वाति बूँद और खारे माती (1992), यह तुम भी जानो (1994), तुमने उसे कब पहचाना (1995), हमारे हिस्से का सूरज (2005), आदि।

•हरिवंशराय बच्चन – बच्चन जी का जन्म 27 नवम्बर 1907 को इलाहाबाद से सटे, प्रतापगढ़ ज़िले के एक छोटे से गाँव बाबू पट्टी में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। (शेष भाग पृष्ठ ८ पर)

(पृष्ठ ७ का शेष भाग)

इनके पिता प्रतापनारायण श्रीवास्तव और माता सरस्वती देवी। इनको बाल्यकाल से बच्चन कहकर बुलाते थे, जिसका शाब्दिक अर्थ बच्चा या संतान होता है। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी में एम.ए. और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी साहित्य के विख्यात कवि डब्लू बी यीट्स की कविताओं पर पी.–एच.डी. पूरी की। 19 साल की उम्र में इनका विवाह श्यामा बच्चन से हुआ, जो उस समय चौदह वर्ष की थी। 1966 में इनकी टी.बी. के कारण मृत्यु हो गई। पाँच साल बाद पंजाबन तेजी सूरी से विवाह किया जो रंगमंच और गायन से जुड़ी थी। इन्हीं से अमिताभ और अजिताभ दो पुत्र हुए। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापन किया। बाद में विदेश मंत्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ और राज्यसभा सदस्य मनोनीत हुए। इनकी कृति 'दो चट्टानें' (1968) को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अलावा सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, कमल पुरस्कार, पद्मभूषण एवं सरस्वती सम्मान से भी सम्मानित किये गए। 18 जनवरी 2003 को 95 वर्ष उम्र में इनका इंतकाल हुआ। काव्य संग्रह – तेरा हार (1931), मधुशाला (1935), मधुकलश (1936), आत्म परिचय (1937), निशा–निमंत्रण (1938), एकान्त–संगीत (1939), आकुल–अन्तर (1943), सतरंगिनी (1943), बंगाल का काल (1946), हलाहल (1946), सूत की माला (1948), खाड़ी के फूल (1948), मिलन यामिनी (1950), प्रणय पत्रिका (1955), धार के इधर–उधर (1957), आरती और अंगारे (1958), बुद्ध और नाचघर, जनगीता (1958), त्रिभंगिमा (1961), चार खेमे चौंसठ खूँटे (1962), दो चट्टानें (1965), मरकत द्वीप का स्वर (1965), नागर गीता (1966), बहुत दिन बीते (1967), कटती प्रतिमाओं की आवाज़ (1968), जाल समेटा (1973), रूप और आवाज़ (1979), सोऽहं हंस (1981), उभरते प्रतिमानों के रूप (1969), बचपन के क्षणभर (1934), ख़य्याम की मधुशाला (1938), सोपान (1953), मैकबेथ (1957), ओथेलो (1959), उमर ख़य्याम की रूबाइयाँ (1959), आधुनिक कवि (1960), नये पुराने झरोखे (1962), चौंसठ रूसी कविताएँ (1964), बचपन के लोकप्रिय गीत, मरकट द्वीप का लोकप्रिय स्वर (1968), आठवें दशक की प्रतिनिधि श्रेष्ठ कविताएँ, मेरी श्रेष्ठ कविताएँ (1984), आ रही रवि की सवारी आदि।

•हरिनारायण व्यास – दूसरे सप्तक के प्रमुख कवि हरिनारायण व्यास का पूरा नाम हरिनारायण घनश्याम व्यास था। इनका जन्म 14 अक्टूबर 1923 को सुन्दरसी शाजा. पुर, (मध्यप्रदेश) में हुआ था। एम.ए. हिन्दी में करने के बाद आकाशवाणी में नौकरी की और वहीं से सेवानिवृत्त हुए। इनका देहान्त 14 फरवरी 2013 को हुआ था। साहित्यिक उपलब्धियों के कारण इन्हें भवभूति सम्मान, शिखर सम्मान एवं अनंत गोपाल शेवड़े सम्मान मिल चुका है। काव्य संग्रह – दूसरा सप्तक (1951), मृग और तृष्णा (1963), त्रिकोण पर सूर्योदय (1980), बरगद के चिकने पत्ते (1984), यक्ष का सन्देश (1994), आउटर पर रूकी ट्रेन, निद्रा के अनंत में जागते हुए आदि।

•हुल्लड़ मुरादाबादी – 28 मार्च 1943 को गुजरावाला (पाकिस्तान) में जन्मे हुल्लड़ मुरादाबादी का पूरा नाम सुशील कुमार चड्ढा था। इनकी शिक्षा बी.एस.सी. और एम.ए. तक हुई थी। इनका एक उपनाम 'सब्र' भी था। इनका निधन 18 फ़रवरी 2014 को हुआ। इन्हें कला श्री, महाकवि निराला सम्मान, ठिठोली अवार्ड, अट्टहास शिखर सम्मान, हास्य रत्न अवार्ड एवं काका हाथरसी सम्मान से सम्मानित किया गया है। काव्य संग्रह– हुल्लड़ का हुल्लड़ (1975) सत्य की साधना (1986), तथाकथित भगवानों के नाम (1986), इतनी ऊँची मत छोड़ो, क्या करेगी चांदनी, यह अन्दर की बात है, त्रिवेणी, हज्जाम की हजामत, वेस्ट ऑफ हुल्लाड़ मुरादाबादी, अच्छा है पर कभी–कभी आदि।

•हरीश पाठक – 28 अक्टूबर 1945 को उज्जैन में जन्मे हरीश पाठक ने एम.ए., पी.–एच.डी. करने के बाद प्राध्यापक का व्यवसाय चुना और साथ में लेखन–कार्य में भी सक्रिय रहे। काव्य संग्रह – नरक को कभी शर्म नहीं आती (1980), पहले ऐसा नहीं था (2004) आदि।

•हरीश भदानी – 'आज की कविता' आन्दोलन का प्रवर्तन करनेवाले हरीश भदानी का जन्म 11 जून 1933 को बीकानेर, राजस्थान में हुआ था। इनकी शिक्षा–दीक्षा महाजनी संस्कृति में हुई। 1960 'वातायन' मासिक पत्र के सम्पादन के अलावा मार्क्सवादी पत्रिका 'कलम' का भी सम्पादन किया। इनका निधन 2 अक्टूबर 2009 को हुआ। काव्य संग्रह – अधूरे गीत (1959), सपन की गली (1961), हँसिनी याद की (1963), एक उजली नज़र की सूई (1966), सुलगते पिण्ड (1966), नष्टो मोह (1981), सन्नाटे के शिलाखंड पर (1982), एक अकेला सूरज खेले (1983), रोटी नाम सत है (1982), सड़कवासी राम (1985), आज की आँख का सिलसिला (1985), पितृकल्प (1991), साथ चलें हम (1992), मैं मेरा अष्टावक्र (1999), क्यों करें प्रार्थना (2006), आड़ी ताने सीधी तानें (2006)।

•हेमन्त कुकरेती – 13 मार्च 1965 को दिल्ली में जन्मे हेमन्त कुकरेती महानगरीय जीवन के महत्त्वपूर्ण कवि हैं। इन्होंने शंकर शेष के नाटकों पर दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.फिल. और पी.–एच.डी. किया है। ये अध्यापक के अलावा स्वतंत्र लेखन का कार्य भी करते हैं, जिस पर इन्हें 'कृति सम्मान' और 'भारतभूषण अग्रवाल सम्मान' मिल चुका है। काव्य संग्रह – चलने से पहले (1996), नया बस्ता (1997), कभी जल कभी जाल (2008), चाँद पर नाव (2010), धूप के बीज।

•ज्ञान प्रकाश विवेक – ज्ञान प्रकाश विवेक का जन्म 30 जनवरी 1949 को बहादुरगढ़ (हरियाणा) में हुआ था। एम.ए. करने के उपरान्त ऑरियटल इंशोरेंस कम्पनी में कार्यरत हैं। हरियाणी साहित्य अकादमी ने इनके दो कहानी–संग्रहों 'अलग–अलग दिशाएँ' तथा 'शिकारगाह' को पुरस्कृत किया है। 2000 में राजस्थान पत्रिका ने कथा सम्मान प्रदान किया था। काव्य संग्रह – प्यास की खुशबू (1980), धूप के हस्ताक्षर (1984), आँखों में आसमान (1991), इस मुश्किल वक़्त में (1992), गुफ़्तगू अवाम से (2003), दरार से झाँकती रोशनी (2009)।

•ज्ञानेन्द्रपति – 1 जनवरी 1950 पथरगामा, संथाल (झारखंड) में जन्मे ज्ञानेन्द्रपति एम.ए. अंग्रेज़ी साहित्य करने के उपरान्त बिहार सरकार में प्रशासनिक अधिकारी और साथ–ही–साथ स्वतंत्र लेखन का कार्य भी जारी रखा है। वर्ष 2006 में 'संशयात्मा' काव्य संग्रह पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला एवं इसके अलावा पहल सम्मान, शमशेर सम्मान, बनारसीदास भोजपुरी सम्मान भी पा चुके हैं। काव्य संग्रह – आँख हाथ बनते हुए (1970), शब्द लिखने के लिए ही कागज़ बना है (1981), गंगा तट (2000), संशयात्मा (2004), भिनसार (2006) कवि ने कहा आदि।

डॉ. निर्भय सिंह
डॉक्टरेट . हिन्दी विभाग,
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय

स्वास्थ्य समाचार

तनाव दूर करके मन को शांत रखते हैं ये 4 योगासन (Yoga Poses For Stress Relief)

स्ट्रेस या तनाव आजकल की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में हमारे जीवन का हिस्सा बन गया है। आज हालात ये हैं, कि हम हर छोटी–छोटी बात का स्ट्रेस ले लेते हैं, पर ये स्ट्रेस हमारी सेहत को न सिर्फ़ बुरी तरह प्रभावित करता है, बल्कि कई बीमारियों का कारण भी बन जाता है। बीमारियों की इस जड़ स्ट्रेस, यानी तनाव को दूर रखने के लिए आज़माएँ, ये 4 योगासन – सुलभ जानुशिरासन, अधोमुख स्वस्तिकासन, सुप्त बद्धकोणासन, सुप्त सर्वांगासन। ये 4 योगासन नियमित रूप से करने से आप स्ट्रेस यानी तनाव से आसानी से छुटकारा पा सकते हैं।

तनाव दूर करके मन को शांत रखने के लिए करें ये 10 आसान उपायः–

1) रात में सोने से पहले ही अगले दिन की प्लानिंग कर लें। ऐसा करने से आप क्लियर रहेंगे कि अगले दिन आपको किस समय कौन–सा काम करना है। काम का सही प्रबंधन करके आप अपना स्ट्रेस काफ़ी हद तक कम कर सकते हैं।

2) रात में जल्दी सोने और सुबह जल्दी उठने की आदत डालें, ताकि आपको पर्याप्त नींद मिल सके। सुबह जल्दी उठने से आप वर्कआउट के लिए आसानी से समय निकाल पाएँगे।

3) किसी भी काम को लास्ट मिनट के लिए न रखें। आप अपने हर काम को जितनी जल्दी निपटा देंगे तो आपका तनाव उतना ही कम होता चला जाएगा; अतः अपना हर काम समय से करें।

4) उतना ही काम हाथ में लें, जितना आप आसानी से कर सकें। मल्टीटास्किंग करनेवाले कई लोग हमेशा तनाव में रहते हैं, इसलिए काम के साथ–साथ अपनी सेहत का भी विशेष ध्यान रखें।

5) रोज़ सुबह उठकर सबसे पहले मुस्कुराएँ और मन में ये सोचें कि आपका आज का दिन बहुत अच्छा बीतनेवाला है।

6) रोज़ सुबह कुछ समय योग, ध्यान और एक्सरसाइज़ के लिए ज़रूर निकालें। ऐसा करने से आपका स्टेमिना बढ़ेगा और आप अपने काम के प्रति ज़यादा फोकस्ड रहेंगे। तनाव दूर करके मन को शांत रखने के लिए हमारे बताए 4 योगासन ज़रूर करें। ये 4 योगासन रोज़ करने से आप स्ट्रेस फ्री रहेंगे और अपना हर काम आसानी से पूरा कर लेंगे।

7) अपने खानपान पर विशेष ध्यान दें। हेल्दी डायट लें, ऐसा करने से आप हमेशा फिट और हेल्दी बने रहेंगे।

8) अपनी हॉबीज़ के लिए समय निकालें। हमारे शौक हमें खुश रखते हैं और हमारा तनाव दूर करते हैं।

9) ऐसे लोगों से दूर रहें, जो हर समय नकारात्मक बातें करते हैं। ऐसे लोगों के साथ रहें, जो हमेशा पॉज़िटिव रहते हैं।

10) हमेशा अच्छे कपड़े पहनें और बन–ठन कर रहें। ऐसा करने से आपका कॉन्फ़िडेंस बढ़ेगा और आप अपना हर काम कॉन्फ़िडेंस से करेंगे, जिससे आपको हर काम में सफलता मिलेगी और आप खुश रहेंगे।

By Kamla Badoni in Health & Fitness, Yoga and Fitness

एलोवेरा का .फायदा

एलोवेरा पाँच हज़ार (5000) वर्ष पुरानी औषधि है। इसको धृतकुमारी, ग्वारपाठा क्वारगंदल, या संजीवन पौधा आदि नाम से जाना जाता है। एलोवेरा में दो सौ (200) से अधिक औषधीय तत्व होते हैं, जिनमें 20 अनिवार्य खनीज, आठ एमिनो एसिड, विटामिन A1,B2, B6, B12, विटामिन C और विटामिन E पाये जाते हैं।

एलोवेरा में शरीर को साफ़ या Detox करने के लिए 'सेपो. निन' नामक तत्व होता है। यह एंटिबायोटिक, एंटिसेप्टिक Enzyme, Anti Oxidant भी हैं।

एलोवेरा रोग प्रतिरक्षण तंत्र (इम्यून सिस्टम) को मज़बूत करने में औषधयीय गुणयुक्त होता है।

एलोवेरा अनेकों बैक्टिरिया–जैसे सालमोनेला, कोलाई आदि के विरूद्ध कारगर करता है।

यह शक्तिवर्धक है। इसके नियमित उपयोग से मेटाबोलिक प्रक्रिया को बल मिलता है। यह शरीर से विषैले पदार्थ को निकलने में सक्षम है।

यह गैस्ट्रिक, अल्सरेटिव कोलाइटिस आदि में भी प्रयोग होता है। एलोवेरा में पाटेशियम की उपस्थिति के कारण लीवर और किडनी में गतिशील आती है।

हृदय विकारों में धृतकुमारी उपयुक्त होती है। जोड़ों का दर्द व घुटनों का दर्द Anthritis में कुछ थैरेपिस एलोवेरा जैल या लेप से दर्द वाली जगह पर हल्की मालिश करने की सलाह देते हैं।

मधुमेह (Diabetes) में एलोवेरा मददगार है।

घाव निरोधी प्रतिक्रिया – इसमें अति उच्च स्तर में कैल्श्यम, पोटेशियम और ज़िंक के अलावा विटामिन 'सी' और 'ई' पाये जाते हैं। घाव को सूखने में मदद करता है।

त्वचा सौन्दर्य में एलोवेरा का उपयोग Moisturiser क्रीम, शैम्पू, cleaning liquid, lotion आदि का प्रमुख उपयोग होता है।

बालों का झड़ना, बाल सफ़ेद होना, dandruff आदि में भी एलोवेरा का उपयोग होता है। दस्त लगने (diarrhea) में स्त्रियों के महामारी के दिनों में तथा गर्भ–धारण के दिनों में एलोवेरा का उपयोग न करें।

डॉक्टर विनय सितिजोरी पी.एच.डी.

आइए, संस्कृत सीखें!

उकारान्त पुलिंग शब्द भानु = सूर्य

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भानुः	भानू	भानवः
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून
तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
चतुर्थी	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पंचमी	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
षष्ठी	भानोः	भानवोः	भानूनाम्
सप्तमी	भानौ	भानवोः	भानुषु
संबोधन	हे भानो!	हे भानू!	हे भानवः!

उकारान्त नए पुलिंग शब्द :–

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
गुरुः	गुरु	शत्रुः	दुश्मन
साधुः	सज्जन	तरुः	वृक्ष
बिन्दुः	बूंद	इक्षुः	गन्ना
प्रभुः	स्वामी	वायुः	हवा
ऋतुः	मौसम	बन्धुः	भाई
शिशुः	बच्चा	इन्दुः	चन्द्रमा
सिन्धुः	समुद्र	पशुः	जानवर
मृत्युः	मौत	तरक्षुः	बढ़ई

इन उकारान्त शब्दों का रूप 'भानु' शब्द के समान होंगे।

भूतकाल (लङ् लकार)

भूतकाल – बीते हुए समय को भूतकाल कहते हैं। भूतकाल के लिए लङ् लकार का प्रयोग होता है। भूतकाल में धातु से पूर्व 'अ' भी लग जाता है। स्वरादि धातु से पूर्व 'आ' लगता है।

भूतकाल (लङ् लकार) के प्रत्यय :–

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	त्	ताम्	तन्
मध्यम पुरुष	:	तम्	त
उत्तम पुरुष	अम्	आव	आम

पठ् धातु – भूतकाल (लङ्) रूप कर्ता और अर्थ सहित

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सः अपठत् (उसने पढ़ा)	तौ अपठताम् (उन दो ने पढ़ा)	ते अपठन् (उन सब ने पढ़ा)
मध्यम पुरुष	त्वम् अपठः (तूने पढ़ा)	युवाम् अपठतम् (तुम दो ने पढ़ा)	यूयम् अपठत (तुम सब ने पढ़ा)
उत्तम पुरुष	अहम् अपठम् (मैंने पढ़ा)	आवाम् अपठाव (हम दो ने पढ़ा)	वयम् अपठाम (हम सब ने पढ़ा)

पंडित धर्मेन्द्र रिकाई

बाल जगत – कामचोर गधा।

एक व्यापारी के पास एक गधा था। वह रोज़ सुबह अपने गधे पर नमक की बोरियाँ व अन्य सामान लादकर आसपास के कस्बों में बेचने जाया करता था।

वहाँ तक जाने के लिए उसे कई छोटी–छोटी नदियाँ और नाले पार करने पड़ते थे। एक दिन नदी पार करते समय गधा अचानक पुल से फिसलकर पानी में गिर पड़ा। इससे गधे की पीठ पर लदा हुआ ढेर–सारा नमक पानी में घुल गया। व्यापारी ने जैसे–तैसे उसे बाहर निकाला। फिर देखा कि कहीं गधे को चोट तो नहीं लगी। मगर गधा सही सलामत था। अब गधे का बोझ काफ़ी हलका हो गया। बोझ हलका होते ही गधा बहुत खुश हुआ।

नमक का व्यापारी गधे को लेकर घर वापस लौट गया। अब वह जाकर भी क्या करता, माल तो पानी में बह गया था। फलस्वरूप उस दिन गधे को अच्छा आराम मिल गया। अब तो गधे ने सोचा कि रोज़ ऐसे ही किया करूँगा।

दूसरे दिन वह व्यापारी फिर गधे पर नमक की बोरियाँ लादकर बेचने निकला। उस दिन फिर नदी पार करते समय गधा जान–बूझकर पानी में गिर पड़ा। उसकी पीठ का बोझ इस बार भी हलका हो गया। व्यापारी उस दिन भी गधे को लेकर घर वापस लौट आया। पर आज व्यापारी ने साफ़–साफ़ देखा था कि गधा जान–बूझकर पानी में गिरा था। उसे गधे पर बहुत गुस्सा आया। मगर गधा अपनी कामयाबी पर बहुत इतराया।

अगले दिन व्यापारी ने गधे की पीठ पर रुई के गट्ठर लाद दिए। गधा बहुत खुश हुआ। उसने सोचा कि आज तो पहले ही कम बोझ है। जब मैं पानी में गिरने का नाटक करूँगा तो कुछ बोझ और हलका हो जाएगा। यही सोचकर वह खुशी–खुशी चल दिया।

नदी आते ही वह पानी में गिर गया। पर इस बार उल्टा ही हुआ। व्यापारी ने उसे जल्दी से बाहर नहीं निकाला।

फलस्वरूप रुई के गट्ठरों ने खूब पानी सोखा और बोझ पहले से कई गुना बढ़ गया। पानी से बाहर आने में गधे को बहुत परिश्रम करना पड़ा। अब उससे चला भी न जा रहा था। मालिक तो पहले ही जला बैठा था, क्योंकि उसने उसका काफ़ी नमक पानी में बहा दिया था। जब गधे से न चला गया तो उसने डंडे से उसकी खूब पिटाई की।

उस दिन के बाद से गधे ने पानी में गिरने की आदत छोड़ दी।

साभार –पंचतंत्र की कहानियाँ

चिटकती रात

आज की रात कुछ चिटक सी गई थी ,
रात के अंधेरेपन में
कुछ दरारें–सी दिख रही थीं,
पलकें आसपास होकर भी
एक दूजे से जुदा–सी लग रही थीं,
ज़ुबां की नमी भी अब
रेगिस्तान–सी सूखी महसूस हो थी,
मेरे अल्फ़ाज़ उस रेत में
फँसे धँसे से लग रहे थे,
उस सन्नाटे में मेरी रूह
ज़ोर–ज़ोर से अज़ान दे रही थी,
मगर सुननेवाला कोई नहीं था यहाँ,
ख़ामोशी में डूबा था सारा जहाँ,
किससे करूँ अपने हालात बयां ?
बेकाबू घोड़ा–सा हो रहा था समां,
लगाम मेरे हाथों से छुटी जा रही थी,
बेलगाम–सी ज़िन्दगी हुई जा रही थी,
मेरे गीत जैसे लग रहे थे रुदाली,
भरे हुए प्याले लग रहे थे खाली,
उलझनों के सैलाब में
डूब रहा था सारा मंज़र
हर एक करवट चुभ रही थी जैसे खंज़र,
अब रात की सियाही में
फीकापन आ रहा था,
गीली आँखों में अब
सूखापन–सा छा रहा था,
आँखें ढूँढ़ रही थीं सूरज की रोशनी को,
बेताब थी पलकें रात के पल समेटने को,
किसी की आँखों में आस भर सकूँ,
खामोशी की चारदीवारी में शोर भर सकूँ,
मेरी ईद के रोज़े को इंतज़ार है इफ़्तार का,
ठहरी हुई ज़िन्दगी को इंतज़ार है रफ़्तार का

सुनिल अग्रहारी

Rentrée Parlementaire. Changement d'attitude du Speaker

Ce qui a frappé le plus avec la rentrée parlementaire du mardi 26 octobre dernier est le changement d'attitude du Speaker, Sooroojdev ¨Phokeer. Annoncé depuis le 3 août dernier quand le Parlement est entré en vacances, comme étant sur le départ, Sooroojdev Phokeer a été bien à sa place le mardi 26 octobre.

Toutefois ceux qui suivent les travaux parlementaires ont constaté un changement d'attitude de sa part. Il a permis aux parlementaires de l'opposition de poser autant des questions possibles. Il leur a permis de débattre sur le projet de loi concernant l'exploration du pétrole. Même quand Xavier Duval a laissé échapper ces mots « stupid guy » à l'intention d'un membre du gouvernement qui l'interrompait, le Speaker n'a pas demandé au leader de l'opposition de retirer ces mots . Il lui a dit simplement de se concentrer sur ses questions. Il a lancé quelques plaisanteries. Come vers 18h, quand il a demandé aux parlementaires de « let's go for refuelling « pour annoncer la pause-thé alors que les débats sur le hub du pétrole étaient engagés. . Et à Paul Bérenger qui a prononcé des mots « unparliamentary », il lui a dit sans crier de retirer ses mots. Et il lui a dit de protéger sa santé, car Paul Bérenger ne portait pas de masque.

L'opposition n'a pas reproché au Speaker grande chose lors de cette séance. Il a même accordé cinq minutes supplémentaires au leader de l'opposition pour sa Private Notice Question (PNQ), alors que Kaiiesh Jagutpal répondu à la question initiale que pendant dix minutes.

Certes ce n'est pas la première fois que le Speaker ait une telle attitude. Il a déjà reçu des félicitations de la part des membres de l'opposition quand il a bien fait son travail. Mais pas pour longtemps . Car aux séances suivantes, il a repris ses mauvaises habitudes.

Ainsi on s'interroge que si ce changement d'attitude est là pour durer. A-t-il reçu des instructions pour mieux présider les travaux parlementaires ? Car son attitude a fait plus de tort au gouvernement que du bien. S'il poursuit sur l'attitude qu'il a adoptée le mardi 26 octobre, l'opposition perdra un grand agent. Car après chaque séance, l'opposition marquait des points .

Defamation no longer a crime in Seychelles after National Assembly vote

Defamation is no longer a crime under the Seychelles Penal Code after the National Assembly passed an amendment to remove it on Wednesday.

Vice President Ahmed Afif presented the proposal to remove sections 184 and 191 from chapter 18 in the Penal Code to the Seychelles National Assembly on Wednesday following recommendations from the Attorney General's office.

Section 184 under chapter 18 defines defamation as "any person who by print, writing, painting, effigy, or by any means otherwise than solely by gestures, spoken words or other sounds, unlawfully publishes any defamatory matter concerning another person, with intent to defame that other person, is guilty of a misdemeanour termed libel."

Afif said that criminal defamation is not only outdated but contradicts several international conventions that Seychelles has signed.

"Although it is rare for anyone to be charged for criminal defamation, the law may be used to silence the media, in turn negatively affecting freedom of expression. It must be noted that the defamation laws are not there to protect anyone's reputation but rather to silence voices against the government and government officials," he explained.

Furthermore, although criminal defamation is a cause for concern everywhere in the world, Afif said that "here in Seychelles it is very rare that someone is charged for such offences."

In the last decade, only Bernard Sullivan has been officially charged for criminal defamation by the Supreme Court after he allegedly paraded the disfigured portrait of a local politician on his vehicle.

Sullivan's sentence was subject to an appeal being lodged before the court of appeals and it made headlines in international news. He was imprisoned for 25 hours at the Central Police station in Victoria, the country's capital. Sullivan took his case to the Constitutional Court and finally to the Court of Appeal claiming that he was prevented from being able to express himself freely.

Following this course of events, the Court of Appeal in August 2014 recommended that the criminal defamation laws be thoroughly reviewed, as they represented a part of the British Common Law that has since been abolished.

"This proposal to remove criminal defamation is a step in a new direction and is a positive sign for the media and the international community... Removing criminal defamation will free us to better enjoy our rights to freedom of expression and allow the media to effectively keep the executive, legislative and judiciary branches of government accountable," he said.

Seychelles, an archipelago in the Western Indian Ocean, has been working to modernise its laws in the last couple of years.

The country with 99,000 inhabitants improved its ranking in the World Press Freedom Index, climbing 11 spots to 52nd out of 180 countries for 2020. The index is published by Reporters Without Borders (RWB), a Paris-based non-governmental organisation

(Seychelles News Agency) -

Economie : Faut-il être satisfait ?

Tous les pays à travers le monde ont souffert de la pandémie. Maurice n'est pas une exception. Des pays ont souffert plus que Maurice et d'autres moins. Où faut-il classer le pays ? On ne sait pas trop. Ceux qui ont toujours écouté le ministre des Finances depuis qu'il occupe cette fonction en novembre 2019, vous diront qu'il se montre toujours optimiste . Encore une fois par les chiffres qu'il a avancés à l'assemblée nationale le mardi 26 octobre dernier tente à montrer que le pays n'a pas été trop affecté par la crise comparé à de grands pays, notamment la Grande-Bretagne.

Pour Renganaden Padayachy, les signes sont là pour annoncer une reprise économique. Il parle d'une croissance de 8.5 au niveau du TIC. Une reprise au niveau de la construction et du textile. Les investissements ont été de Rs 17.4 milliards contre 7.6 milliards au deuxième trimestre 2020. Les exportations ont connu une hausse de 52.6%.

Sur le tableau noir, le Produit Intérieur Brut (PIB) s'est contracté à 14.9% et le tourisme a chuté par 80% durant ces derniers 18 mois.

Le Grand Argentier se réjouit que le taux de chômage prévu à 100,000 n'ait atteint de 9.2%. Le taux d'inflation est estimé à 3.2%. Cela en raison de l'augmentation du taux de fret et de la hausse des produits de base.

Le ministre des Finances a une nouvelle fois parlé des assistances financières pour soutenir les entreprises et des travailleurs.

Au niveau de la croissance, les prévisions de Statistics Mauritius sont de 5.4% et la Banque de Maurice prévoit un taux supérieur.

Avec la réouverture des frontières depuis le 1er octobre, le ministre parle des arrivées satisfaisantes.

Après ce tableau dépeint par Renganaden Padayachy, on se demande si l'économie mauricienne a été aussi été affectée par la pandémie.

Comme on l'a souligné plus haut, le ministre des Finances a toujours déclaré que le pays a su résister à la crise découlant de la pandémie. Certes, tout le monde reconnaît que le gouvernement, grâce aux fonds publics, placés dans la Banque Centrale, a pu venir en aide aux travailleurs du pays. Mais la question que tout le monde se pose est : « faut-il être satisfait de la situation où se trouve le pays ? » Car le double langage pratiqué par les autorités pose problème. Tantôt on dit que le pays est à genoux et tantôt on avance que Maurice s'en est bien sorti.

Augmentation des prix (8-10%) des produits de consommation courante dans les jours à venir

-Possibilité d'une pénurie de l'huile comestible dans les jours à venir

suite de la page 1

L'imminence d'une pénurie d'huile comestible sur le marché mauricien se précise de plus en plus. Durant le weekend dernier, les étagères de certains supermarchés 'dits gagnants' étaient quasiment vides. Ce qui a précipité les consommateurs de tomber sur les quelques bouteilles qui en restaient. Cette situation est provoqué selon certaines informations par les trois importateurs /producteurs de cette commodité essentielle dans la cuisine pour pousser le gouvernement à leur accorder une augmentation généreuse. Deux raisons principales sont mises en avant : (i) le coût du fret maritime et (ii) une certaine pénurie des matières premières au niveau international. Dans tout ce scénario, c'est le consommateur qui en fera les frais !!

Dans les jours avenir, lundi 8 novembre, il y aura toute une pléiade d'augmentation de prix se situant dans la fourchette de 8 à 10%. Grains secs, conserve des légumes en boîtes, produits pré-cuits, sauces de tomates et autres pâtes d'ail ou de gingembre, légumes surgelés, huile comestible, ghee, riz basmati…tous ces produits passent à la trappe et le consommateur devra chercher dans le fonds de sa poche encore 10% pour pouvoir remplir son panier mensuel.

Si cette situation persiste, les risques d'une explosion sociale n'est pas à écarter. On pourra bien évoquer comme principal prétexte le pandémie Covid-19. Mais la situation n'a cessé d'empirer depuis mars 2020. Pour soutenir les démunis, le gouvernement est venu de l'avant dans le courant de cette année avec un package de Rs. 500 millions pour soutenir cette catégorie jusqu'à décembre prochain. C'est une mesure bien accueillie par la population.

Ce soutien de l'Etat dans une telle conjoncture socio-économique difficile devra être prolongé jusqu'à l'année prochaine pour éviter un appauvrissement de la population mauricienne surtout ceux au bas de l'échelle. Si l'Etat peut soutenir les multinationales et les grosses compagnies hôtelières à coup de milliards de roupies, il peut bien accorder une petite fraction pour aider les petits à amortir leurs frais.

Tout en accordant ce soutien temporaire, l'Etat devra garder un œil vigilant sur les coûts administratifs des importateurs. Le Ministère des Prix devra faire un audit sur les différents frais des importateurs afin de déterminer l'impact du coût réel de l'augmentation du fret maritime sur nos importations. A partir de là, les autorités pourront établir une nouvelle fourchette de « mark-up » afin de mieux protéger les petits consommateurs.

La balle est dans le camp du gouvernement.

Le MSM requinqué

Le partie Pravind Jugnauth, le Mouvement Socialiste Militant (MSM), deux ans après sa brillante victoire aux élections générales du 7 novembre 2019, a repris du poil de la bête. Ce parti, acculé pendant la pandémie avec des pratiques douteuses, concernant l'octroi des contrats, l'affaire Wakasio, l'affaire Kistnen, suivis de la démission d'un des plus anciens fidèles du parti, Nando Bodha. Et quand ce dernier a démis de ses fonctions du MSM, on parlait de débandade et aussi d'autres démissions.

La rentrée parlementaire suivie de la démission de Bodha n'a pas été de tout repos pour le gouvernement de Pravind Jugnauth. Acculé sur certains dossiers, des ministres ont eu toute la peine du monde à se justifier . Le budget voté, le gouvernement s'en est pu se retirer d'affaire.

Il y a deux semaines avec le rapport du Pay Reserch Bureau (PRB) , le gouvernement a pu quand-même redorer son blason. Certes ce n'est pas un rapport qui donne trop de satisfaction aux fonctionnaires, mais en novembre, quand les employés du secteur public recevront une importante somme d'argent inattendue , il y aura moins de colère.

La sortie de Maurice de la liste du GAFI et la réouverture des frontières avec des touristes qui arrivent à Maurice, cela sent un retour à la normale pour le pays, sauf au niveau de la Covid.

Alors qu'il a perdu un parlementaire en février dernier, à deux mois de la fin de 2021, le MSM se retrouve sa majorité parlementaire intacte, soit 44 contre 26 à l'opposition.

On a vu un Pravind Jugnauth , très sûr de lui-même durant plusieurs sorties durant ce mois d'octobre. Il a été tantôt chez des travailleurs, tantôt chez de businessmen et surtout chez des organisations socio-culturelles. Il profite avec l'aide la MBC de passer des messages contre l'opposition et tous ceux qui le critiquent dans la presse. Il est confiant que son parti demeure plus populaire que les autres et il croit lui que face une opposition divisée, qu'il peut obtenir un résultat favorable au prochain scrutin, c'est-à-dire les élections municipales.

Le MSM semble être requinqué et Pravind Jugnauth semble donner l'assurance qu'il pourra demeurer à la tête du pays pendant longtemps encore. Sauf…

Le tourisme reprend du poil de la bête, mais...

Quel plaisir de revoir des touristes déambuler dans les rues de la capitale, au Caudan et surtout au bazar de Port-Louis. Des scènes qu'on n'a pas vues depuis plus de 18 mois. Avec la réouverture des frontières, les touristes sont chez nous. Les hôtels sont remplis à au moins 30%. Des propriétaires des bungalows ont des réservations jusqu'à janvier, 2022 voire au-delà e cette date. Les restaurants ont commencé à travailler et les magasins touristiques attirent de nouveau des clients. C'est bien pour tout le monde.

Néanmoins, il y a des interrogations au sujet de la réouverture des frontières. D'abord sur les chiffres. Au 20 octobre dernier on avait appris qu'il y avait environ 30,800 touristes qui ont débarqué à l'aéroport de Plaisance. Soit moins de 2,000 par jour. Il semble qu'il y a y un plus grand intérêt des Mauriciens à venir rendre visite à leurs parents que des touristes à visiter le pays.

On sait que la Mauritius Tourism Promotion Authority (MTPA) a prévu l'arrivée d'au moins 300,000 touristes à la fin de décembre. Tant mieux si on atteint ce chiffre et même si on parvient de le frôler.

Toutefois avec l'arrivée des touristes, il y a plusieurs questions qu'on se pose. Les cas de Covid augmentent. Et les décès liés à cette pandémie. Il est facile aux Mauriciens de connaître le nombre des décès dans d'autres pays que dans son île natale. Pourquoi cacher les chiffres ? Plus on connaît la situation, plus les Mauriciens seront conscientisés !

Toujours avec l'arrivée des touristes, on constate que les prix des légumes, des œufs, du poulet et des fruits locaux ont pris l'ascenseur. On trouve rarement l'ananas et à quel prix si on parvient de le trouver !

On aime quand des touristes viennent. Mais il ne faut pas les prendre comme des personnes supérieures à des Mauriciens. Pourquoi ce barrage sur la plage de Trou-aux-Biches ? Ce n'est seulement sous pression qu'on a l'a enlevée. Et on sait très bien qu'à cause des touristes, des Mauriciens seront interdits dans des restaurants de luxe. On trouvera des prétextes, comme la carte de vaccins ou encore on fera majorer les prix. Et aussi pour louer un taxi, les Mauriciens auront à payer plus cher.

Comme on l'a souligné tout le monde est content de l'arrivée des touristes, mais il ne faut pas que des Mauriciens se retrouvent comme des étrangers dans leur pays.